

पाठ—13 जरासंध

युधिष्ठिर के भाइयों और साथियों ने राजसूय यज्ञ कर सम्राट पद प्राप्त करने की इच्छा जताई ।

राजसूय यज्ञ के बारे में सलाह करने हेतु श्रीकृष्ण को बुलाने हेतु संदेशा भेजा ।

युधिष्ठिर को श्रीकृष्ण ने जरासंध के पराक्रम से अवगत कराया ।

श्रीकृष्ण से जरासंध की पराक्रम गाथा सुनकर युधिष्ठिर ने साम्राज्यधीश बनने की इच्छा छोड़ने का निश्चय किया ।

भीमसेन को युधिष्ठिर की विनयशीलता ने आघात पहुँचाया और उसने जरासंध पर विजय पाने का संकल्प लिया ।

भीमसेन ने कहा कि श्रीकृष्ण की नीति—कुशलता, मेरा शारीरिक बल और अर्जुन के शौर्य—बल के पराक्रम से जरासंध की शक्ति को चूर करकर ही लौटेंगे ।

युधिष्ठिर भीमसेन की इन बातों को सुनकर घबरा गए और बोले कि इस विचार को छोड़ देना ही उचित है ।

युधिष्ठिर की इन बातों से आहत होकर वीर अर्जुन बोला कि यशस्वी भारत की संतान होकर भी हम साहसी काम ना करें तो धिक्कार है ।

अंततः श्रीकृष्ण से आज्ञा लेकर श्रीकृष्ण,भीमसेन और अर्जुन ने वल्कल पहन कर जरासंध की राजधानी में पहुँचे ।

भीम और जरासंध में भयंकर युद्ध हुआ और जरासंध पर विजय प्राप्त करी ।

जरासंध के वध के पश्चात भीष्म की सलाह पर
द्वारकाधीश श्रीकृष्ण की सर्वप्रथम पूजाकर
राजसूय यज्ञ पूर्ण हुआ और युधिष्ठिर को
राजाधिराज की पदवी प्राप्त हो गई ।